International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 7; July 2016; Page No. 209-212

प्रभा खेतान के उपन्यास पीली आंधी में स्त्री की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति

डॉ0 रेनू आनन्द

पीएच0डी0–नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहबाद, भारत।

सारांष

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रभा खेतान के उपन्यास 'पीली आंधी' के विभिन्न स्त्री पात्रों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर चर्चा की गई है। संस्कृति किसी भी समाज की जीने की व्यवस्था को कहा जाता है। प्रभा खेतान ने 'पीली आंधी' उपन्यास में अपने स्त्री पात्रों जैसे राधा बाई, पद्मावती, सोमा एवं विधवा स्त्री के विभिन्न रूपों को सामाजिक एवं संस्कृति से जोड़ने की कोशिश की है। प्रस्तुत उपन्यास एक मारवाड़ी परिवार की स्थिति को व्यक्त करती है कि कैसे मारवाड़ी स्त्रियां अपने पतियों के इंतेज़ार में तीन–चार वर्ष तक अकेले जीवन यापन करती हैं साथ ही साथ अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के साथ सम्बन्ध रखती हैं।

मूलशब्दः सामाजिक स्थिति, संस्कृति,, मारवाड़ी परिवार, प्रेम आदि

प्रस्तावना

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा था कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य एवं समाज एक–दूसरे के पर्याय हैं जो समाज में घटित होता है उसे ही साहित्य में दर्शाया जाता है। प्रभा खेतान के उपन्यास पीली आंधी में भी प्रभा जी ने समाज और संस्कृति का बेजोड़ उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। पीली ऑधी उपन्यास मारवाड़ी समाज की पिछली पीढ़ी की औरतों की स्थितियों उनकी मानसिकताओं, आपसी उलझनों व पुरानी मान्यताओं में कुचलते उनके स्वाभिमान को दर्शाया है। पुरूष के मुकाबले हमेशा दूसरे स्तर पर रखे जाने की मंत्रणा को दर्शाया गया है।

पीली आंधी में मारवाड़ी परिवार की तीन पीढ़ियों की औरतों की कहानी है। राजस्थान में उड़ने वाली बालू के ढूहे से जो आंधी चलती है वह पीली होती है। इस आंधी के कारण और सूखा से ग्रस्त होने के कारण कई मारवाड़ी अलग–अलग जगहों पर जाकर व्यापार करते हैं। वहां की औरते और परिवार वही गांव में रह जाता है और व्यापार करने निकले व्यापारी दो–दो, तीन–तीन साल पर घर आते हैं। कुछ नहीं भी आते और वहीं परदेश में अपना नया घर बसा लेते हैं। उनकी औरतें पति के वियोग में सदा डूबी रहती हैं।

संस्कृति और समाज

संस्कृति के नाम से जीवन के क्रियाकलापों और उनके सृजनात्मक परिणामों का बोध होता है। इन सबका साहित्य के अन्तर्गत अध्ययन करना ही सांस्कृतिक अध्ययन है। श्री रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में ''संस्कृति ज़िन्दगी का तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं। उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है।''

डा. मदन गोपाल संस्कृति के प्रति कहते हैं, ''मानव जीवन की सम्पूर्ण गतिविधियों का संचालन अंतर्वृत्तियों की जिस समष्टि द्वारा होता है तथा जिसके अपनाने से वह सच्चे अर्थों में मनुष्य बनने की दिशा में अग्रसर होता है उसे संस्कृति कहते हैं।''[1]

पीली आंधी उपन्यास में औरतों की स्थिति

1 राधा बाई

राधा बाई बिना किसी शिकायत के जो मिला उसे स्वीकार करते हुए एक आदर्श बहू, पत्नी, मां और इन सबसे बढ़कर चाची की भूमिका निभाती है। उन्हें किसी से शिकायत नहीं रही केवल परदेश में अपने देश की याद सताती रही। उन्होंने सांवर के साथ–साथ माधो की भी अच्छी परवरिश उसकी मां बनकर की तभी तो माधो भी उसे ही अपनी मां स्वीकार करता है। अपनी मां की मृत्यु पर बस इतना ही कहता है–'' चाची तू है ना मेरी मां! गांव जाकर क्या होगा?''[2] इससे माधव का राधा बाई के प्रति लगाव दिखाई देता है।

2 पद्मावती

पद्मावती का बचपन का नाम करनी बाई था लेकिन माधो ने जब करनी बाई से दूसरा विवाह किया तब उसकी सौन्दर्य को देखकर उसका नाम पद्मावती रख दिया। पद्मावती अपने विवाह के समय 14 वर्ष की थी वह माधो से आधे उम्र की थी। पद्मावती अति रूपवती, समझदार और अनुशासन प्रिय स्त्री थी। पीली आंधी में पद्मावती एक सशक्त स्त्री पात्र है जो अपने बच्चे न होते हुए भी अपने देवर के बच्चों को अपनाती है। उनकी सेवा, देखभाल सब अपने बच्चों की तरह करती है। माधो को अपनी पहली पत्नी से कोई संतान नहीं होती है और न दूसरी पत्नी पद्मावती से ही। पद्मावती एक आज्ञाकरी बहू थी जो अपनी सास की सब बाते मानती है। वह अपनी देवरानी के बच्चों को संभालती है और जब राधा बाई उसे देवरानी के बेटे को गोद लेने को कहती है तब पद्मावती कहती–''नहीं मां जी, मेरे तो छहों टाबर अपने हैं। एक को गोद लेने से वह अपना होगा या नहीं, यह तो मालूम नहीं। लेकिन बाकी और सारे टाबरी पराई हो जाएगी।''[3]

इस सयानी बातों को सुनकर राधा बाई और माधो पद्मावती पर प्रसन्न हो जाते हैं लेकिन पद्मावती के जीवन में पति का प्रेम ज़्यादा दिनों तक नहीं रहता और वह तैंतीस वर्ष की उम्र में विधवा हो जाती है। पद्मावती चूंकि जवानी में ही विधवा हो जाती है इसलिए उसके मन में पन्नालाल सुराजा के प्रति प्रेम जागृत हो जाता है। सुराजा जी विवाहित हैं उनके बच्चे भी हैं लेकिन वह भी पद्मावती से प्रेम करते हैं। दोनों का प्रेम आगे बढ़ता है लेकिन चोरी छुपे सुराजा उससे विवाह करना चाहते हैं, उसे पूरी तरह पा लेना चाहते हैं। लेकिन पद्मावती को संसार से डर लगता है। उसे लगता है कि यदि समाज यह जान जायेगा तो माधो की इज़्ज़त नष्ट हो जायेगी। उसका परिवार बिखर जायेगा। इसलिए वह इस मर्यादा को नहीं लांघती। जब सुराजा कहते हैं यह चुनरी ओढ़कर दिखाओ तब वह कहती है कि ''सुराजा जी आपके कहने से चुनरी तो मैंने ओढ़ ली लेकिन मांग कैसे भरूं? सुराजा जी सिन्दूर का दाग इतनी जल्दी तो मिटेगा नहीं। साबुन से धोने पर रगड़–रगड़

कर पोछने पर भी दो–चार दिन तो ललाट पर ललाई रह ही जाती है–––जानते हैं सुराजा जी जब बड़े बाबू का स्वर्गवास हुआ तब मैं सीसों में अपनी सूनी सफेद मांग देखा करती और धीरे–धीरे मांग से रगड़–रगड़ कर हिंगलू का दाग मिटाती रहती–––''[4]

हमारे समाज की यह अव्यवस्था है कि विधवा स्त्री का सफेद वस्त्र पहनने पड़ते हैं। उसे अपने साज श्रृंगार का त्याग करना पड़ता है और कुल मर्यादा की लोक लाज को बचाने के लिए वह दूसरा विवाह भी नहीं कर सकती उसे अपनी इच्छाओं को दबाना पड़ता है जिसका नतीजा होता है कि वह सारी उम्र आंसुओं में अपने दर्द को मिटाती चलती है। पद्मावती अपने देवर के बच्चों को पालती पोशती है। उनका विवाह करती है उसके पति द्वारा कमाया धन भी उनको दे देती है। फिर भी उसको वह सम्मान नहीं मिलता जो उसे मिलना चाहिए, उसका देवर ही उसे ''चुप रहो राड। नहीं तो तुम्हारा झोंटा पकड़ कर घर से बाहर कर दूंगा।''[5]

कहकर उसे अपमानित करता है जो स्वयं उनके घर में रहता है। वही उसे बेघर करने की धमकी देता है यदि पति जीवित होता है तो समाज भी उस विधवा को सम्मान की दृष्टि से देखता है, नहीं तो उसे बेघर कर सम्पत्ति हड़पना चाहता है। यदि पद्मावती चाहती तो सुराजा से विवाह कर उसे सारी सम्पत्ति दे सकती थी लेकिन स्त्री हमेशा त्याग में विश्वास करती है। उसे तो मर्यादा भी निभानी है। चाहे उसके लिए उसे अपनी इच्छाओं का गला ही क्यों न घोटना पड़े। पद्मावती जब अपनी देवरानी के बेटे गौतम का विवाह करती है तब घर में सोभा आती है। सोभा पढ़ी–लिखी अंग्रेजी बोलने वाली दिल्ली के एक व्यापारी अग्रवाल की बेटी है। लेकिन उसका पति गौतम नामर्द है। वह कुसंस्कारी है तभी तो वह पुजारी भैया और नये ड्राइवर के साथ समय बिताता है। सोभा सीधी–साधी है वह सब धीरे–धीरे समझ जाती है नहीं क्या इस बात को सारा घर जानता है लेकिन कोई कुछ बोलता नहीं है लेकिन पद्मावती से उसका दर्द नहीं देखा जाता। सोमा पुत्र चाहती है। लेकिन गौतम उसे वह सुख नहीं दे पाता है। सोमा से कहने पर पद्मावती उसे पढ़ाने के लिए टीचर सुजीत को रख देती है। सुजीत और सोमा का प्रेम हो जाता है और सोमा गर्भवती हो जाती है। जब गौतम को यह बात पता चलती है तो घर में कोहराम मच जाता है। और सोमा घर छोड़कर सुजीत के घर चली जाती है। यहां पर पद्मावती को सोमा का दर्द अपना दर्द लगता है। उसे लगता है कि जिस प्रकार वह देवरानी के बच्चों की सेवा करते हुए वैधव्य जीवन का पालन करती रही वैसा वह सोमा को नहीं करने देगी। इसलिए जब सोमा घर छोड़कर जाना चाहती है तो उसे पद्मावती रोकती नहीं है। बल्कि ड्राइवर से कहकर उसे उसकी मंज़िल तक छोड़ने को कहती है।

पद्मावती और सोमा की कहानी एक जैसी है। लेकिन फर्क सिर्फ यह है कि लेखिका ने सोमा के माध्यम से जागृति, क्रान्ति का आह्वान किया है। लेखिका चाहती है कि स्त्री केवल मूक दर्शक बनकर केवल सहन न करे बल्कि अपनी आवाज़ को बुलंद करे। ज़्यादा से ज़्यादा क्या होगा लोग बातें करेंगे, चर्चा होगी लेकिन उसकी तो मुक्ति का मार्ग खुल जायेगा।

3 सोमा

बेल्हम देहरादून से पढ़ी सोमा बीस वर्ष की युवती थी जब उसकी शादी गौतम के साथ हुई। सोमा खूबसूरत शोख, प्रखर दिमाग़ वाली लड़की थी जबकि गौतम किन्दी हाई स्कूल से पढ़ा–लिखा था। सोमा गौतम से शादी नहीं करना चाहती थी क्योंकि वह स्मार्ट लड़का नहीं था। लेकिन मां बाप की इच्छा के आगे सोमा को झुकना पड़ा पहली मुलाकात में गौतम सोमा को एक वयस्क बालक लगा था, जो अपने को पुरूष प्रमाणित करने की चेष्टा में लवलीन था। सोमा के सारे सपने धराशाही हो गये उसके सपनों उसके सपनों का घरौंदा टूट गया और जो मिला वह था जाई जी का अनुशासन जिसमें घर की औरतों को सजधज कर, श्रंगार कर पूजा पाठ करना पड़ता। वे अपनी मर्ज़ी से घर से बाहर नहीं जा सकती थी। सुबह उठकर नहाकर ठीक आठ बजे पूजा करना पड़ता उसके बाद नाश्ता घर बहुत ही समृद्ध था प्रत्येक बहु के लिए एक नौकरानी जो उनके काम करती और कपड़े भी धुलती। औरते तो केवल साज–श्रंगार के लिए थी और फिर बैठकर लड़कियों की शादी के लिए कढ़ाई बुनाई करती। यह रोज़ का नियमित काम सोमा को बहुत बुरा लगा वह चैन से सो भी नहीं पाती थी। उसे यह बात ज्यादा बुरा लगती कि यह सुबह जागने का नियम केवल बहुओं के लिए ही था जबकि बेटे आराम से सो सकते थे। सोमा हनीमून के लिए जाना चाहती थी इसलिए उसकी मम्मी ने समान भी दिए थे लेकिन उस घर में तो हनीमून की प्रथा ही नहीं थी वह तो अकेले गौतम के साथ शहर घूमने भी नहीं जा सकती थी। सोमा को ऐसा लगता था मानो पूरे घर को ताई जी अपने पंजे में दबोच रखी हैं। सोमा न तो बेड टी ले सकती थी न ही घर में ब्रेड टोस्ट खाने की व्यवस्था थी। उसे घी तेल में बने पारंपरिक मारवाड़ी भोजन करना पड़ता था। उसक इच्छाएं धीरे–धीरे करके टूटने लगी। बाद उसे एहसास होने लगा कि ताई जी उतनी बुरी नहीं हैं। वह धीरे–धीरे ताई जी की चहीती बहू बनती जा रही थी और उसे यह भी एहसास होने लगा कि उसके मां पिता ने पहले तो उसकी मर्ज़ी के खिलाफ उसकी शादी कर दी और अब वे उसके ससुराल वालों को भी दोशी मानने लगे थे। खासकर ताई जी को तभी तो सोमा के मम्मी–पापा कहते हैं कि ''सोमा की तो अपनी सास भी नही, तायस है। अरे वह भी जिसने एक बच्चा तक नहीं जना। वह क्या जाने कि, जाए की कसक क्या होती है।''[6]

लेकिन अब सोमा के लिए ताई जी मां से बढ़कर हो गयी थी। सोमा के जब बच्चे नहीं होते तो वह ताई जी से आगे पढ़ने के लिए कहती हैं और ताई जी उसे घर में पढ़ाने के लिए प्रो0 सुजीत सेन को लगा देती हैं। सोमा सुजीत सेन से प्रेम करने लगती है और वह गर्भवती हो जाती है। सुजीत सर पहले से शादी शुदा थे और उनकी एक पुत्री भी थी। सोमा चूंकि मां बनना चाहती है लेकिन गौतम उसकी इच्छा को पूरी नहीं कर पाता इसलिए सोमा सुजीत सर के साथ सम्बन्ध बनाती है। सोमा कहती है, ''सुजीत! मैं तुमसे प्यार करती हूं। मैं जानती हूं तुम विवाहित हो, मैं भी तो विवाहिता हूं और हमारा यह अवैध सम्बन्ध दुनिया क्या कहेगी? समाज क्या कहेगा? तुम्हारी पत्नी मुझे धोखेबाज़ कहेगी? यही न, लेकिन मैं क्या करूं सुजीत सब कुछ समझते हुए भी मैं अपने आपको रोक नहीं पा रही।''[7] और फिर सोमा घर छोड़ देती है और सुजीत सर के घर जाकर रहने लगती है।

यहां पर लेखिका ने यह बताने की कोशिश की है कि यदि समाज में कुछ अलग या अनैतिक घटित होता है तो परिवर्तन होता है। गौतम का नैतिक सम्बन्ध सोमा को विचलित कर देता है। उसके बच्चों की चाहत ही उसे सुजीत सर की तरफ आकर्षित करती है। सोमा इस अनैतिकता को चुपचाप सारी उम्र ताई जी की तरह सहन नहीं करती और सारे समाज से घर वालों से विद्रोह कर एक नया जीवन स्वीकार करती है। यह सोमा का कदम बहुत ही परिवर्तनशील है लेकिन समाज का हर वर्ग इस परिवर्तन को इतनी आसानी से स्वीकार नहीं करता है। स्त्री को ही उल्टा कलंकनी, बदचलन आदि अनेक नामों से सम्बोधित किया जाता है जबकि समाज पुरूष को कुछ भी नहीं कहता। गौतम के अनैतिक सम्बन्ध को घर के सभी लोग जानते थे लेकिन कोई उसे मना नहीं करता है। उसके बड़े भाई को व्यापार में फायदा देखकर चुप रहते हैं। यदि समाज में बदनाम हुई तो सोमा क्योंकि वह स्त्री है और वह घर छोड़कर भी चली जाती है। इस उपन्यास में सोमा का यह साहसिक कदम परिवर्तन की बयार लेकर आई। वह समाज में स्त्री

की भावनाओं को नई दिशा देती है कि यदि हम चुपचाप इस अनैतिकता को बर्दाश्त करेंगे तो यह हमारी नियति जो सालों से चली आ रही है। वह वैसी ही बनी रहेगी। स्त्री को सभी कुछ चुपचाप सहन नहीं करना चाहिए अपनी आवाज़ को भी बुलन्द करनी चाहिए।

प्रभा खेतान ने तो सोमा के माध्यम से समाज में परिवर्तन किया। समाज को एक नई सोच, नई दिशा जिस घर चलकर स्त्री अपने सुखों को प्राप्त कर सकती है

विधवा स्त्री

पीली आंधी उपन्यास में दो विधवा स्त्रियों का वर्णन किया गया है। एक है माधव की दूसरी पत्नी पद्मावती और दूसरी हैं सांवर की बड़ी बेटी रेवा बाई। रेवा बाई के पति का अचानक हार्ट फेल हो गया था। ताई जी जो कि खुद विधवा थी वह विधवा का दर्द जानती थी इसलिए उन्होंने रेवा बाई को वापस अपने ससुराल नहीं जाने दिया उनका कहना था, ''मैं नहीं इसको वापस भेजने की। वहां क्या रखा है? जिन्दगी भर मेरी छोरी दाई की तरह देवर जेठ की गृहस्थी खटती रहेगी। न यह कुछ कर पायेगी और न इसके बच्चे।'' [8]

इसी प्रकार ताई जी विधवा होकर केवल अपनी देवरानी के बच्चों को ही पालती पोशती रह गयी। उन्हें सुराजा जी से प्रेम भी हुआ लेकिन विधवा होने कारण लोक–लाज के डर से अपनी इच्छाओं को मार दिया और अपना सारा जीवन सांवरमल का परिवार संभालने में न्योछावर कर दिया। जब सुराजा जी पद्मावती को ओढ़नी ओढ़ाते हैं तो आटत हो जाती हैं। विधवा होने के बाद पद्मावती हमेशा सफेद साड़ी में रहती हैं। पद्मावती कहती हैं कि ''सुराजा जी आपके कहने से चुनड़ी तो मैंने ओढ ली लेकिन मांग कैसे भरूं? सुराजा जी सिंदूर का दाग इतनी जल्दी मिटेगा तो नहीं। साबुन से धोन पर रगड़–रगड़ कर पोछने पर भी दो चार दिन तो ललाट पर ललाई रह ही जाती है––– जानते हैं सुराजा जी, जब बड़े बाबू का स्वर्गवास हुआ, तब मैं शीशे में अपनी सफेद गंगा देखा करती। और धीरे–धीरे मांग से रगड़ कर हिंगलू का दाग मिटाती रहती––– मै। उस समय बहुत रोती थी।''[9]

स्त्री को विधवा होने के बाद अपने सारे शौक, श्रृंगार को त्याग देना पड़ता है। पद्मावती भी अपनी इच्छाओं को मारकर विधवा की तरह जीवन जीती है।

डसी प्रकार रेवा बाई भी विधवा का जीवन जी रही होती है। जब सोमा रेवा से अपना ब्लाउज देने को कहती है। तो रेवा बाई कहती हैं, ''भाभी, तुम सुहागण हो, गंगा जी नहाकर मेरा ब्लाउज मत पहनों मैं बड़ी भाभी का लाकर दे देती हूं।''[10] इस प्राकर विधवा स्त्री अपनी हीन स्थिति को स्वीकार लेती है।

संस्कृति

पीली आंधी में मारवाड़ी परिवार में मनाये जाने वाले त्योहारों का वर्णन किया गया है। होली, दीवाली, सावणी, तीज आखा तीज, जन्माष्टमी का त्योहार मनाये जाते, गले लगते, धोंक खाते, बहुएं बड़ी बूढ़ियों के पगा लगती मन में किसी तरह का लाग और खोट नहीं था। इससे पता चलता है कि उनके देश सुजान गढ़ में कौन–कौन से त्योहार मनाये जाते थे। वहां की औरते हमेशा पर्दा किया करती थीं लेकिन उन्हें पानी के लिए कुएं पर जाने की इजाज़त थी। उनकी ओढ़नी पर कारचोबिए का काम होता, बेल–बूटी लगी होती, रंग–बिरंगी आंगियों की बाहों में चौड़ गोठ किनारा रहता। सेठ जी पचरंगी पगड़ी और लाल अचकन पहनते। घर की औरते दोपहर के समय इकट्ठा होकर ओढ़नी में तारा लगाती और ओढ़नी शादी के लिए तैयार करती। विधवा औरते सफेद साड़ी पहनती थी।

भोजन

मारवाड़ी भोजन का वर्णन पीली आंधी में हुआ है। फोगले का साग, कढ़ी और हरे पोदिने की चटनी। बाजरे का टिकड़ा घी तर किया हुआ। मारवाड़ी लोंगो का प्रिया भोजन बाजरे की बाटी और चूरमा होता है और वे लोग देशी घी का अत्यधिक प्रयोग करते हैं। वही धनबाद आकर उन लोगों ने चावल–दाल फुलक खाये। पानी की कमी के कारण उनके गांव में चावल दाल गेहूं नहीं होता है। इसलिए वे बाजरे की रोटी खाते हैं। लेकिन धनबाद में भरपूर वर्षा होती है। इसलिए वहां सभी प्रकार के भोजन बनते हैं। लेकिन रूंगटा हाउस में अंग्रेज़ी खाना खाना नहीं पसंद किया जाता है। उनके यहां पर बेड टी का भी रिवाज नहीं है। बिना नहाये धाये और पूजा पाठ किये किसी को भोजन नहीं मिलता है। और नाश्ते मे साग कचौड़ी तो कभी सुहाली और बादाम का हलवा खाना, वह भी साथ में भरा हुआ गिलास दूध का। बच्चों की टिफिन में तली हुई पूड़ियां और आलू की सूखी सब्जी। साथ में नींबू या आम का अचार। ज़्यादा खाना है ज़्यादा खा लो कम खाना कम खा लो लेकिन रोज़ बनता वही था। बंधा–बंधाया भोजन।

लोकगीत

मारवाड़ का लोकगीत है हरजस। माधयव को याद आता है कि किस प्रकार चांदनी रात में उसके दादा हरजस गाया करते थे। और उन गानों को याद कर माधव गाने लगता है–

> ''ग्वालीड़ा थूं काई जागै फिर पराई,
> हाथ लकुटिया कांधै कमरिया,
> वन–वन धेनु चराइ''

ओझा जी के ढोलक की थाप पर फिर माधव गाता है

> ''जब म्हारा मोती पीवण लाग्या, तो सोने के रंगतार हो––– हो राम–––
> जद राधा, हरि ने गोती पैराया, तो चंद्रसखी जस गया––– हो राम–––''

और माधव बाबू अर्थ समझा रहे थे–'' राधा जी मोतियों की खेती कर रही थीं, क्योंकि हरि को मोतियों की माला पहननी थी।

उसी प्रकार निबली बाई भी एक गीत गाती है। जिसमें राजस्थान की लोक संस्कृति झलकती है–

> ''पिया मैमद लेज्या, भरिमा बहण घर भात,
> पिया कुंडल लेज्या, भरिमा बहण घर भात,
> गोरी–सी नणदल कितनों तो करयों यों गुमान,
> पिया नानै कोई ये न जाण, आया नै जाणे संसार।''

निष्कर्ष

इस उपन्यास में प्रभा खेतान के दृष्टिकोण से देखा जाये तो उन्होंने एक वर्ग विशेष (मारवाड़ी) के परिवारों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को उपन्यास के रूप में दिखने का प्रयास किया है और एक मारवाड़ी परिवार की स्त्रियों की समस्याओं का वर्णन किया है। प्रभा खेतान ने स्त्री के आधुनिकता एवं उसके सशक्तीकरण को बड़े व्यवहारिक ढंग से वर्णित किया है। अवश्य ही सोमा आधुनिकता को लेकर चलने वाली स्त्री है साथ ही वह स्त्री सशक्तीकरण का भी रूप है। जो ये सोचती है कि क्या सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्य एक स्त्री के लिए ही है और खुद को अपने ज्ञान एवं दर्शन के अनुसार वह यह निर्णय लेती है कि स्त्री जीवन सिर्फ तिरस्कार एवं समर्पण का ही रूप नहीं है बल्कि सही को सही और गलत को

गलत कहने का अधिकार उसे होना चाहिए। वह पद्मावती अपना सारा जीवन सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को निभाने में बिता देती है। इसके लिए वह अपनी सभी इच्छाओं को दमित करती रहती है और एक संतुलित परिवार को बनाने हेतु सच और झूठ के बीच तालमेल बिठाती रहती है। प्रभा खेतान ने तो सोमा के माध्यम से समाज में परिवर्तन किया। समाज को एक नई सोच, नई दिशा दी जिसपर चलकर स्त्री अपने सुखों को प्राप्त कर सकती है

संदर्भ ग्रन्थ

1 डा॰ मदन गोपाल, बंजारा लोक साहित्य और समाज पृ0 69।
2 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 51।
3 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 11।
4 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 303।
5 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 301।
6 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 241।
7 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 245।
8 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 137।
9 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 303।
10 प्रभा खेतान, पीली आंधी पृ0 1।